क्या अधिगम हुआ?

तपस्या साहा

मैं काफी अर्से से अध्यापिका रही हूँ। लेकिन आज मैं उन अनुभवों के बारे में बात नहीं कर रही। आज तो मैं एक अलग तरह के शिक्षण अनुभव के बारे में लिखने जा रही हूँ।

पिछले कुछ समय से मैं अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में युवा पुरुषों और महिलाओं के लिए कार्यशाला का संचालन कर रही हूँ; इस बार मुझे शोरापुर के जिला संस्थान के सदस्यों के साथ कार्य करना था। मुख्य रूप से मेरा कार्य प्रतिभागियों के 'सामाजिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य और विषय सम्बन्धी ज्ञान' का विकास करना था। इसका मतलब यह था कि मुझे इन विषयों पर मॉड्यूल विकसित करना था और कार्यशाला के रूप में इस समूह की मदद करना था। अधिकांश कार्यशालाओं की अवधि तीन से पाँच दिनों की थी।

प्रतिभागियों की पृष्ठभूमि

प्रतिभागियों की उम्र 27 से 38 वर्ष की थी और वे इतिहास या राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त कर चुके थे। उनमें अधिकतर स्कूल के अध्यापक तो नहीं थे लेकिन कुछ सालों से वे विभिन्न सरकारी स्कूलों के सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों के साथ काम कर रहे थे।

वे कर्नाटक राज्य बोर्ड के राजनीति विज्ञान और इतिहास के पाठ्यक्रम से तो काफी परिचित थे लेकिन भूगोल विषय से उनका अधिक परिचय नहीं था। इसके लिए उन्होंने जो दो कारण बताए वे ध्यान देने योग्य हैं। सरकारी विद्यालयों में सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों को ही भूगोल की अवधारणाएँ समझना मुश्किल लगता था; एक तो यह उनका विषय नहीं था; दूसरे पाठ्यपुस्तक की भाषा विषय सम्बन्धी बातों पर बहुत कम प्रकाश डालती थी, इसलिए स्वयं सीख पाना भी आसान नहीं था। नतीजतन, भूगोल वाला हिस्सा पढ़ाया ही नहीं जाता था।

जब मैंने अपने समूह से पूछा कि उनकी मुझसे क्या अपेक्षाएँ हैं तो उन्होंने अपने मुख्य सरोकार मेरे सामने रखे जो इस प्रकार थे - इतिहास शिक्षण की आवश्यकता की समझ, भूगोल में निहित विभिन्न अवधारणाओं की समझ, भारतीय संविधान की अवधारणा की समझ और इन सबको कक्षा में पढ़ाने का तरीक़ा। वे चाहते थे कि मैं ऐसे उपयुक्त क्रियाकलापों का निर्माण करूँ जो 12 से 14 वर्ष के विद्यार्थियों के लिए ठीक रहें।

मेरी चुनौती

मुझे कन्नड़ भाषा का बहुत कम ज्ञान है। मैं अँग्रेज़ी और हिन्दी बोल, पढ़ और लिख सकती हूँ लेकिन प्रतिभागी कन्नड़ भाषा में बहुत सहज थे और कुछ को अँग्रेज़ी और हिन्दी का थोड़ा ज्ञान था।

एक सुगमकर्ता के रूप में मेरी भूमिका

मॉड्यूल प्रस्तुत करते समय मैंने भाषा अवरोध की चुनौती को ध्यान में रखा और स्व-अधिगम के तरीक़ों को उसमें मिश्रित करते हुए एक संरचनात्मक विधि का पालन किया।

किसी विषय को पेश करते समय मैं उसमें स्पष्टता लाने के लिए कभी कहानी का सहारा लेती, कभी वीडियो दिखाती या फिर प्रश्न पूछती। कभी-कभी मैं विशेष वेशभूषा धारण करके अभिनय करती। मैंने पढ़ने के लिए अँग्रेज़ी में विषय से सम्बन्धित दिलचस्प सामग्री जुटाई और महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं पर क्रियाकलाप और खेल तैयार किए। ऐसा करते समय मैंने अँग्रेज़ी और हिन्दी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया।

सुगमीकरण के दौरान, मैंने उन सदस्यों से कन्नड़ भाषा में चर्चा करने को कहा जो हिन्दी और अँग्रेज़ी भाषा समझते थे। हमने मानचित्रों और चित्रों का उपयोग किया जिन्हें मैंने तथा अन्य लोगों ने बनाया था और जो अँग्रेज़ी और कन्नड़ में लेबल किए गए थे। इसमें कोई शक नहीं कि हम धीमी गति से चल रहे थे। सारी पाठ्य सामग्री अँग्रेज़ी में थी इसलिए शुरुआत में उनके लिए यह वाकई एक चुनौती थी। कुछ नियम भी थे। कन्नड़ में नोट्स लेने और चित्र बनाने के कार्य व्यक्तिगत रूप से किए जाने थे। फिर इन्हें समूह-गतिविधि में प्रयोग में लाना था। यह कार्यविधि बाद में स्व-अधिगम में सहायक होने वाली थी।

मैंने यह बात सुनिश्चित की कि मैं जिन अवधारणाओं और शब्दों का उपयोग करूँ, उन्हें हिन्दी और अँग्रेज़ी भाषा समझने वाले समूह कन्नड़ में दोहराएँ। मैंने उनसे श्यामपट्ट पर कन्नड़ में मुख्य बिन्दु लिखने के लिए कहा और उन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित किया कि वे बेझिझक उन सारे सवालों को पूछें जो उनके दिमाग में उठ रहे थे। मैंने उनकी प्रत्येक शंका

और प्रश्न का उत्तर बड़ी ईमानदारी के साथ दिया। तो समूह में जो भी सवाल पूछता उसे फ़ायदा होता, अतः दूसरे लोग भी प्रोत्साहित हुए और प्रश्न पूछने के लिए आगे आए। मैं विषय के बारे में उनकी समझ और उनके अनुभव ध्यान से सुनती। हर कार्यशाला के अन्त में एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की गई जिसमें उन सारे उदाहरणों, सन्दर्भों और प्रश्नों का उल्लेख होता जिन पर चर्चा हुई थी।

समूह-पठन, जिग-सॉ पठन और प्रत्येक समूह द्वारा प्रस्तुति जैसी गतिविधियों ने प्रतिभागियों का आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद की। नियमानुसार उनके समन्वयकों ने सदस्यों को एक साथ बैठने के लिए प्रेरित किया, अपने नोट्स व सीखी हुई बातें साझा कीं और हर कार्यशाला के बाद मॉड्यूल तैयार किए।

वास्तव में कार्य कैसे सफल हुआ?

प्रतिभागी स्व-अधिगम, समूह-अधिगम और साथियों के साथ अधिगम के माध्यम से सीखने में सक्षम हुए। मैं यहाँ एक बात अवश्य कहना चाहूँगी कि इस पूरी गतिविधि में मेरी भूमिका गौण थी। वास्तव में देखा जाए तो प्रतिभागियों ने अपने स्वयं के लिए जो लक्ष्य निर्धारित किए थे, उस ओर जाने के लिए इस कार्यशाला ने उनका मार्गदर्शन मात्र किया।

सबसे रोचक बात यह है कि हमने अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की संस्कृति के अनुरूप बहुत स्नेहपूर्ण रिश्ते साझा किए। यहाँ हम सबका आदर करते हैं और एक-दूसरे को वैसे ही स्वीकार करते हैं जैसे हम हैं। हम एक-दूसरे की क्षमताओं पर पूरा भरोसा व विश्वास रखते हैं और हम सभी फ़ाउण्डेशन के साझे लक्ष्य - स्कूल के बच्चों को 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना' - को पाने के लिए प्रयासरत हैं।

मैं वयस्कों के साथ कार्य कर रही थी और इसलिए मुझे उन्हें प्रेरित करने की चुनौती का सामना नहीं करना पड़ा, मैंने सिर्फ़ यह प्रयास किया उनमें ज्ञान की खोज के लिए दिलचस्पी, जिज्ञासा और रोशनी प्रज्वलित हो जाए; एक अध्यापिका होने के नाते मुझे पता था कि केवल विषय-सामग्री का ज्ञान दे देने से प्रतिभागियों की सहायता नहीं होगी। तीसरी कार्यशाला के बाद मैंने उनसे उनकी अपेक्षाओं के बारे में पूछा और उनके सुझावों के आधार पर अपने मॉड्यूल बनाए।

क्या अधिगम हो रहा था? यह सवाल मुझे हमेशा परेशान करता रहा।

कुछ प्रतिभागी असन्तुष्ट थे क्योंकि वे भाषा अवरोध के कारण मेरी बात समझ नहीं पा रहे थे और अँग्रेज़ी की पाठ्य सामग्री पढ़ने के लिए तैयार नहीं थे। चूँकि मुझे पाठ्य सामग्री के उचित अनुवाद नहीं मिल पाए, इसलिए मैंने अँग्रेज़ी पाठ्य सामग्री पर ही ज़ोर दिया। शुरू में तो प्रतिभागी साथ मिलकर पाठ्य सामग्री समझने के लिए जूझ रहे थे, पर उन्होंने हार नहीं मानी और धीरे-धीरे पाठ्य सामग्री का आनन्द लेना शुरू कर दिया। ऐसा लगता है कि वे न केवल व्यक्तिगत स्तर पर समझकर ज्ञान का निर्माण कर रहे थे बल्कि अपने कार्यों में उसका प्रयोग भी कर रहे थे।

यह सब कैसे हुआ

शायद ज्ञान प्राप्त करके समर्थ होने या अपनी क्षमता बढ़ाने की भावना के कारण प्रतिभागी डटे रहे। वे जिन अध्यापकों के साथ नियमित रूप से बातचीत करते रहते थे, उन्होंने जिन विषयों या प्रकरणों के बारे में पूछा था, उससे सम्बन्धित ज्ञान को समझने या प्राप्त करने की अत्यावश्यकता, रुचि और जिज्ञासा उन्हें प्रेरित करती रही। वे खुद भी उन बातों को सीखना चाहते थे जो उन्होंने पूछी थीं। जो कुछ वे चाहते थे उसे पाकर वे प्रसन्न और सन्तुष्ट हुए। अन्तिम और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि समूह ने मिलकर सीखा, इसलिए किसी एक पर सीखने का बोझ नहीं पड़ा।

मैं भाषा अवरोध के होते हुए भी ख़ुश थी क्योंकि अधिगम फला-फूला था।

तपस्या साहा पिछले आठ वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। इसके पहले वे कई वर्षों तक माध्यमिक और उच्चतर स्तर की कक्षाओं में भूगोल का अध्यापन करती रही हैं। फ़ाउण्डेशन में वे विभिन्न ज़िला संस्थानों के सदस्यों के साथ भूगोल विषय की संसाधिका के रूप में कार्य करती हैं। वे विभिन्न अमूर्त भौगोलिक अवधारणाओं को सरल तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास करती हैं। उन्हें भूगोल विषय में उत्कट रुचि है। उनसे tapasya@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

Printed and Published by Manoj P on behalf of Azim Premji Foundation for Development;
Printed at Suprabha Colorgrafix (P) Ltd., No. 10, 11, 11-A, J.C. Industrial Area, Yelachenahalli, Kanakapura Road, Bangalore 560062.

Published at Azim Premji Foundation for Development, Azim Premji University Pixel B Block, PES College of Engineering Campus, Electronic City, Bangalore 560100; Editor: Prema Raghunath